International Journal of Research Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

21वीं सदी के संदर्भ में भक्ति काव्य की प्रासंगिकता

सुशीला
Deptt of Hindi
Email : ms4sushila@gmail.com
Ward no. 6 Gali no. 1,Thana Kalan Road, Sant Colony
Kharkhoda, Sonepat (Haryana)

21वी सदी के समय, समाज और संवेदना को ध्यान में रखें तो लगता है कि आज का समय वैश्विक बाजारवाद और मीडिया के प्रभाव से इस तरह ग्रस्त है कि मानवीय संवेदना के लिए कहीं कोई अवकाश नहीं रह गया है। पिछले युगों में जहां परिवार एक इकाई था और संबंध–सूत्र अत्यन्त प्रगाढ़ थे, वहीं 21वीं शताब्दी तक आते–आते व्यक्ति इकाई बन गया है, और संबंध सूत्र इतने उलझ गये हैं कि कब टूट जायं इसका कोई भरोसा नहीं। देखने में तो आज मीडिया ने वसुधैव कुटुम्बकम् को साकार कर दिया है किन्तु परस्पर संवेदनीयता के अभाव में उसका चरितार्थ होना प्रायः असंभव–सा है। आज भीड़ में रहकर भी व्यक्ति अकेला है और परस्पर संबंधों में भी उसे अविश्वास की गंध मिलती है। यह एक ऐसी विडम्बना है जिससे बचने के लिए 21वीं सदी में कहीं कोई राह दिखायी नहीं पड़ती। आँकड़ों पर गौर करें मो पति–पत्नी संबंधों के टूटने व तलाक के मामले पश्चिमी देशों में तो पहले से ही चल रहे थे किन्तु भारतीय समाज में इनका प्रचलन जिस तेजी से बढ़ा है उससे पति–पत्नी संबंध के सामने भी एक बड़ा सवालिया निशान खड़ा हो गया है। आशय यह है कि इस उलझन–भरी शताब्दी में मानवीयता की राह पाने का अगर कोई मार्ग सामने दिखता है तो वह भक्ति काव्य में ही उपलब्ध है। इस तरह 21वीं सदी में भक्ति काव्य की प्रासंगिकता विचारणीय है। मैनें अपने इस संक्षिप्त निबंध में इसी पर अपना विचार रखने का विनम्र प्रयास किया। वह कहां तक सार्थक है इसका निराकरण सुधी पाठक ही करेंगे।

हिन्दी का भक्ति काव्य प्रतिपाद्य विषय एवं प्रतिपादन शैली दोनों दृष्टियों से अत्यंत महत्वपर्ण है। इस काव्य ने भारतीय जीवन के लौकिक–आध्यात्मिक सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है। इसका धार्मिक, दार्शनिक, सांस्कृतिक आदि दृष्टियों से विशेष महत्व है। निर्गुण तथा सगुणमार्गी कवियों ने जीवन–मूल्यों को बहुत दूर तक प्रभावित एवं प्रेरित किया है। यदि एक ओर निर्गुणमार्गी कवियों ने सभी प्रकार की संकीर्णताओं, बाह्माचारों एवं मिथ्या रूढ़ियों का विरोध करते हुए मानवतावाद का संदेश दिया, सभी प्राणियों को एक सामान्य धरातल पर प्रतिपादित किया, वहीं दूसरी ओर सगुण भक्त कवियों ने प्राचीन भारतीय मान्यताओं के परिप्रेक्ष्य में नया संदेश दिया। सन्त काव्य का सामाजिक महत्व भी है। सन्त कवियों ने दार्शनिक मतवाद अथवा कोरे तर्क के चक्कर में न पड़कर स्वानुभूति पर बल दिया। शताब्दियों से शोषित एवं पीड़ित तथाकथित निम्नवर्ग के उत्थान की घोषणा की। समाज में व्याप्त छुआछूत, ऊँच–नीच की भेदभाव तथा जन्मगत श्रेष्ठता का विरोध किया और शास्त्र वचन की अपेक्षा अनुभव को महत्व देते हुए सम्य का उद्घाटन किया। इन सन्त कवियों ने ईश्वर की सर्वशक्तिमात्ता में विश्वास करते हुए सत्य को निर्भीक वाणी में अभिव्यक्त किया, मिथ्या धारणाओं का खण्डन किया।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

इस प्रकार इन्होनें मानव समाज के सामूहिक कल्याण की चर्चा की, और धर्मनिरपेक्ष सामाजिक व्यवस्था को प्रोत्साहित किया। एक प्रकार से सन्त काव्य वैचारिक क्रान्ति का काव्य है, जो सत्य और समता के आदर्श को उपस्थित करता है तथा धर्म के नाम पर की जानेवाली सभी बुराइयों का विरोध करता है।

सूफी काव्य प्रेम काव्य है, सूफियों ने घृणा के स्थान पर प्रेम का संदेश दिया, मुस्लिम सूफी कवियों ने हिन्दू प्रेमकथाओं के माध्यम से हिन्दुओं और मुसलमानों को निकट लाने का प्रयास किया तथा हिन्दू–मुस्लिम संस्कृतियों में सामंजस्य स्थापित करते हुए भावात्मक एकता का प्रयत्न किया। उनके काव्य में निहित प्रेम का आदर्श धर्म के नाम पर उत्पन्न खाईं को समाप्त करने की दिशा में बहुत बड़ा कदम है–बिरिछ एक लागी दुइ डारा।

सगुण भक्ति काव्य का सामाजिक, पारिवारिक एवं सांस्कृतिक सभी दृष्टियों से विशेष महत्व है। मर्यादावाद के पोषक राम भक्त कवि तुलसीदास ने जो सामाजिक आदर्श उपस्थित किया उसका प्रभाव आज भी विद्यमान है। तत्कालीन सामाजिक एवं सांस्कृतिक विश्रंखलता एवं अराजकता के युग में उनकी वाणी ने भारतीय श्रेयस्कर मार्ग दिखाया। टूटते हुए पारिवारिक संबंधों और क्षुद्र स्वार्थ के लिए संघर्षशील मनुष्यों को उन्होंने आलोक प्रदान किया। एक आदर्श पारिवारिक व्यवस्था कैसी हो सकती है, पिता–पुत्र, भाई–बहन, पति–पत्नी, गुरू–शिष्य आदि का संबंध कैसा होना चाहिए तथा समाज के विभिन्न वर्ग धनी–निर्धन, गृहस्थ, संन्यासी किस प्रकार आदर्श जीवन का अनुसरण कर सकते हैं इसकी दीक्षा हमें राम काव्य से मिलती है। लोक मर्यादा स्थापित करने की दृष्टि से अकेले रामचरितमानस श्रेष्ठतम् गंथ है। गोस्वामी तुलसीदास ने न केवल निर्गुण–सगुण अथवा ज्ञान–भक्ति संबंधी विवादों को सुलझाने का प्रयास किया अपितु शैव, वैष्णव, शाक्त आदि संप्रदायों के नाम पर विभक्त और संघर्षरत मनुष्यों को भी एकता और शान्ति का संदेश दिया। संस्कृति के दो पक्ष होते हैं–आचार और विचार। भक्त कवियों ने इन दोनों पक्षों को प्रभावित किया तथा एक वैचारिक धरातल पर उच्च दार्शनिक विचारों को सरस वाणी में प्रस्तुत किया, वहीं दूसरी ओर हमारे आचार पक्ष अर्थात् पारिवारिक जीवन, खान–पान, वेश–भूषा आदि का भी आदर्श स्वरूप जीवन में आनन्द का संचार किया। इन कवियों में निहित समर्पण की भावना ने अहं भाव का विनाश किया। भक्त कवियों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक योगदान भारतीय वर्ण–व्यवस्था का आदर्श प्रस्तुत करते हुए उसका संरक्षण रहा है। इन कवियों ने यदि एक ओर धूर्त पण्डितों के संकीर्ण मतों का खण्डन किया तो दूसरी ओर निर्गुणिया सन्तों के श्रुति और शास्त्रविरोधी प्रचार की निन्दा करते हुए श्रुतिसम्मत तथा विरति–विवेकयुक्त मार्ग के अनुसरण पर बल दिया। उस समय धर्म व संस्कृति के दो केन्द्र बने–काशी और वृन्दावन। इन केन्द्रों से जीवन के आचार और विचार दोनों पक्षों का बहुत प्रेरणा मिली। इन स्थानों पर स्थापित विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों और उनसे संबंध संतों ने जो आचार संहिता निर्मित की उसका प्रभाव समकालीन जीवन पर पड़ा ही, अब भी वह हमारी प्रेरणा के स्त्रोत बने हुए हैं।

भक्त कवि स्वतंत्र और स्वाभिमानी थे, किसी भी प्रकार का प्रलोभन अथवा भय उन्हे अपने मार्ग से डिगा नहीं सकता था। राजकीय वैभव से दूर रहकर इन कवियों ने स्वान्तः सुखाय काव्य की रचना की, इनके स्वान्तः सुखाय का आदर्श स्वामिनः सुखाय का विरोधी है और लोक–मंगल का प्रतीक है। निर्गूण–सगुण दोनों वर्गों के कवियों ने जाति, धर्म, लिंग, देश, काल की सीमाओं से परे जनकल्याण का जो संदेश दिया वह न केवल भारतीय काव्य में अपितु विश्व–काव्य में अन्यतम है।

भक्ति काव्य में न केवल कला की अपितु संगीत, नृत्य, चित्र, मूर्ति आदि कलाओं की भी उन्नति हुई। सगुण भक्ति धारा के अधिकांश कवि संगीत के भी अच्छे जानकार थे। वृन्दावन काव्य और संगीत

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

दोनों का केन्द्र था। अष्टाछाप के प्रायः सभी कवि संगीतज्ञ थे। उनमें गोविन्दस्वामी अपने समय के सर्वश्रेष्ठ संगीतज्ञ थे। अकबरी दरबार के प्रसिद्ध गायक तानसेन कृष्ण भक्त कति स्वामी हरिदास के ही शिष्य थे। कृष्ण भक्ति काव्य के माध्यम से नृत्य कला के विकास में भी सहायता मिली। क ृष्ण भक्त कवि अपने उपास्य की प्रेममयी लीलाओं का आनन्दविभोर होकर अभिनय करते थे। रासलीला के माध्यम से नृत्य कला की विविध झाँकियां प्रस्तुत करते थे। इनके आराध्य श्रीकुष्ण स्वयं नटनागर थे। मीरां अपने प्रभु के समक्ष नर्तन करती थीं। गोस्वामी तुलसीदास ने मानस के आधार पर रामलीला का प्रचार किया था। इस प्रकार रामलीला और रासलीला के माध्यम से जिस लोकधर्मी नाट्य परम्परा का विकास हुआ उसने भारतीय सांस्कृतिक जीवन को बहुत गहराई तक प्रभावित किया। कथक नृत्य में प्रायः राधा–कृष्ण की प्रेममयी लीलाओं की ही अभिव्यक्ति होती है। इस प्रकार इन भक्त कवियों ने भारतीय जीवन की आध्यात्मिक चेतना को दिशा–निर्देश दिया ही, लोकजीवन में नूतन स्फूर्ति का भी संचार किया। वस्तृतः भक्तों की वाणी में निराशा और पलायन का स्वर नहीं है अपितु वह हमें विषम परिस्थितियों में भी जुझते हुए मंगलमय पथ का अनुसंधान करने की प्रेरणा देता है। कृष्ण काव्य बाल स्वभाव, स्त्री स्वभाव और पशु स्वभाव की दृष्टि से अनुपम है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के शब्दों में ''सूरसागर में गोपियों की विविध प्रेम लीलाओं का इतना अधिक वर्णन है कि इसे स्त्री चरित्र का विशाल काव्य कहा जाय तो अनुचित न होगा।'' इनकी रचनाओं में प्रकृति वर्णन के भी मनोरम दृश्य मिलते हैं। सूर साहित्य में किसानीं और चरागाही संस्कृति का सर्वोत्तम रूप दिखलायी पड़ता है।

तुलसीदास का कलापक्ष अत्यन्त प्रौढ़ एवं बहुमुखी है। उन्होने अपने समय तक प्रचलित समस्त काव्य–भाषाओं और काव्य–शैलियों को राममय कर दिया। ब्रज और अवधि के अतिरिक्त उन्होनें हिन्दी की अन्य बोलियों को अपनाया ही, देशी–विदेशी भाषाओं के लोक प्रचलित शब्दों को काव्य में स्थान देकर हिन्दी के शब्द–भण्डार की वृद्धि की। उन्होने प्रबंध काव्य भी लिखा और मुक्तक भी। यही नहीं चन्दबरदायी की कवित्त शैली, कबीर का दोहा शैली, सूफी कवियों की दोहा–चौपाई शैली, सूर की गीत शैली के अतिरिक्त लोकजीवन की सोहर शैली आदि के साथ–साथ दर्शन गोस्वामी तुलसीदास में होते हैं। उनके तथा सूफी कवियों के प्रयास से अवधी भाषा का व्यापक प्रचार–प्रसार हुआ। सनत कवियों का कलापक्ष यद्यपि बहुत परिष्कृत और प्रौढ़ नहीं है तथापि वे लोकजीवन के बहुत निकट हैं। इस प्रकार भक्ति काव्य किसी विशेष वर्ग, जाति अथवा क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा है, अपितु समस्त भारतीय जीवन का प्रतिनिधि काव्य है।

भक्ति काव्य के इस विवेचन के पश्चात् अब उसके प्रासंगिकता पर विचार करना समीचीन होगा।

प्रासंगिकता वर्तमान के परिप्रेक्ष्य से अतीत को देखने की दृष्टि है। भूमिका में स्पष्ट कर दिया गया है कि आज 21वीं सदी में जहां बहुविधि भौतिक विकास को चरम सीमा तक पहुंचा दिया है, वहीं दूसरी ओर उसका मानवीय पक्ष, जिसे साहित्य में संवेदना पक्ष कहा जाता है, कमजोर है। कारण है विकास की दौड़ में आगे निकल जाने की होड़ और प्रचुर मात्रा में भोग–सामग्री को व्याप्त करना। आज जिस तरह बाजारों में बड़े–बड़े मल्टी–नेशनल स्टोर, माल और होटल दिखायी पड़ते हैं, उसका मानवीयता से कोई सरोकार नहीं। वहां प्रदर्शित वस्तुएं अर्जित कर भोग में विश्वास रखने वाले संपन्न लोगों के लिए हैं। सामान्य जनता कोसों दूर हैं। सम्पन्नों और विपन्नों के बीच यह खाईं ही 21वीं सदी का समस्याओं की जड़ है जो समूचे विश्व को अपनी गिरफ्त में लिए हुए है। आतंकवाद आज विश्व की सबसे बड़ी समस्या है और इसी के साथ जुड़ी हुए समस्या है अपने हक को मांगते–मांगते थक गये लोगों का छीनने में विश्वास। नाम कोई भी दिया जाय लेकिन असमानता और अपना हक पाने की जिज्ञासा इसके पीछे निहित है।

e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 20
December 2016

भक्त कवियों ने अपने समय के सच को पहचानते हुए मानवीयता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता जतायी और अपने युग के धार्मिक अविश्वास और मतभेद को पाटने में वे बहुत हद तक सहायक हुए। इसीलिए उनके द्वारा सुझाया गया मार्ग 21वीं सदी में भी उतना ही प्रासंगिक है जितना वह 15वीं व 16वीं सदी में था।

आज के रचनाकार को भी भक्त कवियों की तरह आश्रय और अर्थ के लोभ से मुक्ति पानी होगी और पीड़ित–दलित जनता की ओर अपनी दृष्टि डालनी होगी, तभी वे वर्तमान समस्याओं से जुझ रही मानवता को त्राण दिला सकेंगे। आज का बौद्धिक विमर्श नाकाफी है, उससे कोई हल नहीं निकलता, हल निकलता है संवेदनात्मक प्रभाव से। आज के रचनाकार को अपनी संवेदना को नये सिरे से सहेजना होगा और जनमानस की पीड़ा को अपने विमर्श का उपजीव्य बनाना होगा। यही संदेश भक्त कवियों का काव्य देता है। वहां भेद–भावरहित लोभमुक्त संवेदनात्मक भूमिका है, जो आज की संवेदनशून्य बनती जा रही स्थितियों को नये से उत्प्रेरित कर उसके मानवीय अंश को बनाये रखने की प्रेरणा देता है। रचनाकार समाज का सजग प्रहरी होता है, उसकी दृष्टि से कोई चीज अछूती नहीं रहती, किन्तु यह तभा संभव है ज बवह अपनी मानवीय संवेदना के साथ अपनी रचना को सर्वजन सुलभ बनाने का प्रयत्न करें। यही कार्य भक्त कवियों ने किया था और यही कार्य करना होगा 21वीं सदी के रचनाकारों को। यदि वे चाहते हैं कि 21वीं सदी का समूचा भौतिक विकास विध्वंसकारी बनकर मानवीयता को विनष्ट न कर दे तो उन्हे सजग होकर मानवीय पक्ष को अपनी रचना का आधार बनाना होगा तभी उनकी रचनाएं युग के लिए प्रासंगिक होंगी।

सन्दर्भ सूची :

1 राकेश रंजन : अभी अभी जनमा है कवि (2007), पृ 156
2 राकेश रंजन : अभी अभी जनमा है कवि (2007), पृ 15
3 हरिशचंद्र पाण्डेय–वागार्थ : जुलाई 2009, पृ 10
4 राकेश रंजन : बहुवचन : जुलाई–सितंबर (2009), पृ 16
5 अशोक वाजपेयी : दुःख चिट्ठीरसा है (2008), पृ 45
6 अशोक वाजपेयी : दुःख चिट्ठीरसा है (2008), पृ 71
7 राकेश रंजन : बहुवचन : जुलाई–सितंबर (2009), पृ 69